Topic 65

ण्यन्त प्रक्रिया ।

स्वतन्त्रः कर्ता ।

क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात्

तत्प्रयोजको हेतुश्च ।

कर्तुः प्रयोजको हेतुसंज्ञः कर्तृसंज्ञश्च स्यात्

क्रिया के प्रधानभूत कारक का प्रयोजक 'हेतु' कहलाता है और 'कर्ता' भी । इस प्रकार उसकी दो संज्ञाएँ होती हैं । उदाहरण के लिए 'श्याम मोहन को खिलाता है' में मोहन प्रधानभूत कारक है क्योंकि वही खाता है । 'श्याम' 'मोहन' को खाने की प्रेरणा देता है, अतः प्रधानभूत कारक का प्रयोजक होने से वह 'हेतु' संज्ञक है और कर्ता संज्ञक भी ।

हेतुमति च ।

प्रयोजकव्यापारे प्रेषणादौ वाच्ये धातोर्णिच् स्यात् । भवन्तं प्रेरयति, भावयति ।

ओः पुयण्ज्यपरे ।

सनि परे यदङ्गं तदवयवाभ्यासोकारस्य इत् स्यात् पवर्ग-यण्-जकारेष्ववर्णपरेषु परतः । अबीभवत् ।